Vol III Issue XI Aug 2014 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 11 | Aug. 2014
Impact Factor : 2.1002 (UIF)
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

मध्यप्रदेश में जनजातियॉं एवं उनके पारम्परिक खेल

अशोक कुमार जाटव , रेखा गुप्ता

सारांश :

जनजातियों के पारम्परिक खेल से अनकी स्थायीता झलकती है। क्योंकि आधुनिक समय में खेल भी कई तरह के हो गये है किसी भी देश की पहचान पहले खेलों से होती थी अब ऐसा नही है जब कि जनजातियों ने अपने खेलों को जो पारम्परिकता प्रदान की है वह अनुठी है एक पहचान है देश की पहचान है। विशिष्टता दृष्टिगोचर होती है विभिन्न प्रकार की जनजातियों मे अलग–अलग खेल खेले जाते है। फिर भी पारम्परिक खेल में समानता है केन्द्र तथा राज्य सरकारों को उनकी पहचान कायम रखने के लिए अलग मंत्रालयों, सग्राहलयों को प्राथमिकता दे रखी है ताकि चिरस्थायी पहचान कायम रह सकें।

प्रस्तावना :

जनसंख्या के आधार पर देखा जाए तो देश में सर्वाधिक जनजातीय आबादी मध्यप्रदेश मे निवास करती है। 2001 की जनगणना के अनुरूप राज्यों मे अनुसूचित जनजाति की आबादी के अनुपात के संदर्भ मे देखा जाए तो मध्यप्रदेश शेष राज्यों व केन्द्रशासित प्रदेश मे बारहवें क्रम पर आता है। 2001 की जनगणना के अनुसार म.प्र. की कुल आबादी 6,03,48,023 में से 1,22,33,474 जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों की है। इसमे स्त्रियों की जनसंख्या 60,38,234 है। राज्य में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या प्रदेश की कुल जनसंख्या का 30.20 कीसदी है। 1991 से 2001 की जनगणना के बीच राज्य मे अनुसूचित जनजाति की आबादी की दशकीय वृद्विपर 24.3 आकी गई है। अनुसूचित जनजाति के संदर्भ में 2001 की जनगणना के आंकड़े यह अध्याय लिखे जाने तक अनुपलब्ध थे। इसलिए 2001 की जनगणना के आंकड़ो के अनुरुप आगें विभिन्न 2001 के जनगणना के अनुसार राज्य मे कुल 46 अनुसूचित जनजातियों की उपस्थिति दर्ज की गई। आवासीय क्षेत्रों के संदर्भ में देखा जाए तो राज्य की कुल जनजातीय आबादी का 93.6 फीसदी भाग ग्रामीण क्षेत्रों मे निवास करता है। राज्य के जिलो के संदर्भ मे देखा जाए तो झाबुआ जिले में सर्वाधिक 86.8 बड़वानी में 67 फीसदी डिण्डोरी में 64.5 और मण्डला में 57.2 फीसदी आबादी अनुसूचित जनजातियों की है। मध्यप्रदेश में जनजातीय समूहों की आबादी के संदर्भ में देखा जाए तो राज्य की कुल जनजातीय आबादी में भीलों की उपस्थिति सर्वाधिक 37.7 फीसदी है। 2001 की जनगणना में राज्य की कुल जनजातीय आबादी 1,22,33,474 में से भीलों की जनसंख्या 46,18,068 दर्ज की गई। इसके बाद गोंडो की आबादी दूसरे क्रम पर आती है। गोड़ो की जनसंख्या 43,57,918 है। अनुसूचित जनजाति की कुल आबादी में उनका प्रतिशत 85.6 है गोड़ों के बाद कोल, कोरकू, सहारिया और बैगा जनजातियों का नम्बर आता है। भीलों गोड़ों के साथ कोल, कोरकू, सहारिया और बैगा जनजातियों की आबादी को मिला दिया जाए तो वह राज्य की कुल जनजातीय आबादी का 92.2 फीसदी हो जाएगी। राज्य में भीलों की आबादी का सर्वाधिक संकेन्द्रण झाबुआ, धार बड़वानी और पश्चिम निमाड़ जिलों में है। राज्य की दूसरी बड़ी जाति गोड़ो की है। आबादी की बहुलता क्रमशः छिन्दवाड़ा, मण्डला, बैतूल, सिवनी और शहडोल जिलों में है। चार अन्य महत्वूपर्ण जनजातियों कोल, कोरकू, सहारिया और बैगाओं का सकेन्द्रण रीवा, पूर्व निमाड़, शिवपुरी शहडोल जिलों में देखा गया।

मध्यप्रदेश की अनुसूचित जनजातियाँ

(1)अगरिया (2)आन्ध(3) बैगा (4) भैना (5) भारिया भूमिआ, भुईहार भूमिया, भारिया, पालिहा, पांडो (6)भत्तरा

(7)भील, भिलाल, बरेला, पटलिया (8)भील मीना (9) भूजिया (10)बीआर, बीयार (11)बिंझवार (12) बिरहुल, बिरहोर (13)दमोर, दमरिया(14)धनवार (15)गडावा, गडबा (16) गोंड, अरख, अरेख, अगरिया, असुर, बड़ी मारिया, बडा, मारिया, भूटोला, भीमा, भुत्ता कोइलाभुता, कोलियाधुली, भार, बिसोनहॉर्न मारिया, छोटा मारिया, दंडासी, मारिया थुरू, धुरवा, धोबा, धुलिया डोरला, गायकी, गट्टा, गट्टी, गेटा, गोंड, गवारियाँ, हिल मारिया कंडरा, कलंगा खटोला, कोइतर कोया, खिरवागर, खिरवारा, कुचा, मारिया, कुचाकी मारिया, माड़िया, मन्ने, मन्नेवार, मोध्या, मोगिया, मोधय, मुड़िया, मुरिया, नगारची, नागवंशी, ओझा, रगाजगोंड, सोन्झारी झरेका, झाटिया, बडेमारिया, डरोई। (17) हलबा, हल्बी (18) कमार (19) कारकू, (20) कोंडर कंवर, कोर चेरखा, राधिया, तेंवर, छत्री (21) कीर (भोपाल, रायसेन, सीहोर जिले में) (22) खैरवार, नाहुल, बोधी, बोडेया (23) कारवां, कोडकू, (24) रवारिया (25) कोल (26) कोंथ, खोड, कांथ (27) कालम (28) कोरकू, बोपची, मोवासी, निहाल, नाहुल, बोधी, बोडेया (29) माझी (30) मझांवर (31) मवासी (32) मीना विदिशा जिलें में सिरोंज उपखंड में) (33) मुंडा (34) नगेरिया (35) उरांव, धनका, धांगड़ (36) पनिका (1) छतरपुर, पन्ना, रीवा, सतना, शहडोल, उमरिया, सीधी, और टीकमगढ़ जिले में (2) दतिया जिले के सेवढ़ा एवं दतिया तहसीलों में) (37) पाओ, (38) परधान, पधारी, सरोती (39) पारधी (भोपाल, रायसेन, और सीहोर जिले में) (40), पारधी, बहेलिया बहेल्लिया, चिता पारधी, लंगोली, पारधी, फॉस पारधी शिकारी, टकनकरण, टाकिया (1) छिन्दवाड़ा, मंडला, डिन्डौरी, एवं सिवनी जिलो में। (2) बालाघाट जिले की बेहर तहसील (3) बैतूल जिले की बैतूल, भैंसदेही, एवं शाहपुर तहसीलों (4) जबलपुर जिले की पाटन तहसील एवं सिहोरा एवं मजोली ब्लाक (6) होशंगाबाद जिले की होशंगाबाद बाबई, सोहागपुर, पिपरिया बौर बनखेड़ी तहसीलों तथा केसला ब्लाक नरसिंहपुर, जिला एवं (7) खण्डवा (पूर्वी निमाड़) जिले की हरसूद तहसील में) (41) परजा (42) सहारिया, सेहारिआ, सोसिया, सोर (43) सओंता, सोंता (44) सौर (45) सांवर, सावरा (46) सोंर

आदिवासी समाज के भी अपने खेल होते है। उनके इस खेल में सच्ची खेल भावना और ईमानदारी की झलक दिखाई पड़ती है। इनके खेल मे न तो कोई रैफरी होता है, और न ही कोई इसका आयोजक। इनके खेल मे पारम्परिक और जाति का निर्वाह दिखाई पड़ता है। खेल देखने वाले भी उन्ही के जाति के लोग होते है। और खिलाडी भी वे ही होते है। विवाद की स्थिति तो कभी आती ही नही है। जनजाति के लोगों मे खार पाट घुधामाल, ढुकढुकणियां,आवली –पीपली के अलावा सोलहसार, अंरी–दुरी–तिरी–चंगा इनके प्रमुख खेल होते है।

शोध कार्यों का अवलोकन :– लुईस हेबरी मार्गन 1851 में एक विस्तृत हुरों पासा खेले के बारें में एक दस्तावेज और अन्य उदाहरण पेश किया तथा अपने शोधपत्र में आदिवासीयों के पारम्परिक खेलों का विवरण पेश किया।

1897 में मानवविज्ञानी जेम्स मूनी अमेरिकी भारतीय पुरुषों और महिलाओं वेगरिंग ले जिसमें खेल देखा ने अपने शोध पत्रों मे लूथर स्थायी पासा खेल आदि खेलों का वर्णन किया।

इलिन एम. लूना, फायर बगबग, मेटीजों टेपेकोनिक फाक्से ने द सहरिंग ट्रेडिशन (इंडियन गोमिंग इन स्टोरिस एंड मार्डन लाइफ) ये विभिन्न खेलों का वर्णन कर उनके पारम्परिक खेलों को बताया।

आदिवासी गोमिग परॅ लबनंद संस्थान के लिए मूल अमेरिकी अंतिम शोध परियोजना रिपोर्ट में गोमिग और स्व प्रतिनधित्व में जान बोडियर एवं विक्स ने फरवरी 2011 में प्रकाशित रिपोर्ट में भारतीय जनजातियों के पारम्परिक खेलों का विवरण भी किया है।

शोध की परिकल्पना :– मध्यप्रदेश में जनजातियॉं एवं उनके पारम्परिक खेल के माध्यम से जनजातियों की भावन एवं समरस्ता देखने को मिलती है इनके खेल प्रसिद्ध है तथा खर्चे भी न्यून है जनजातियों को उनके खेल आपसी में जोड़ने का सशक्त माध्यम है। इनके खेलों का अध्ययन का हम उनका प्रचार प्रसार अन्य वर्ग मे भी कर सकते है। क्योकिं ये रोचक मनोंरजक होते है। इनके खेलों में स्थयीत्वता, एकात्मकता, खेल भावना, बंधुत्वता सभी लक्ष्ण परिलक्षित होते है। महिलाऍं अपने खेलो को अलग ढंग से पदर्शन करती है शोधपत्र के माध्यम से जनजातियों के खेलो का प्रचार प्रसार कर लोकप्रिय बनाना है।

खेलो के प्रकार :–

1.खार–पाट
2.धुधामाल
3.ढुक ढुकणियॉं
4.आंवली–पीपली
5.खो–खो
6.कबड्डी
7.गिल्ली डंडा
8.पिड्डू

1)रवार – पाट :– यह खेल कबड्डी का ही दूसरा रूप कहा जा सकता है, इसमें टीमों में नौ–नौ खिलाड़ी होते है। कबड्डी की ही तरह मैदान होता है, जिसमें मैदान के बीच में एक रेखा खींचकर चार आड़ी रेखाएं खींची जाती है। खिलाड़ी संकेत पाते ही दूसरी टीम के खिलाड़ी झुकाते हुए। उन्हें छूने का प्रयास करता है, वह खिलाड़ी टीम के मैदान से मिट्टी उठाता है और मध्य रेखा पर करते ही अपने मैदान में अपने पर जोर से वह रवार बोलता है। उसके रवार बोलने का आशय यह होता है कि दूसरे के मैदान से मिट्टी ले आया है। इस खिलाड़ी की फूर्ती देखते ही बनती है। हार–जीत का फैंसला इस बात पर निर्भर करता है कि किस टीम का खिलाड़ी कितने बार मिट्टी लेकर आया है। जो ज्यादा बार मिट्टी लाता है, वह टीम विजयी होती है।

2)धुधामाल :– जनजातियों में धुधामाल खेल काफी लोकप्रिय है। यह खेल चाँदनी रात में गाँव में नौजवानों द्वारा खेला जाता है। इसमें दो दल होते है। गाँव के बैलों की कद–काठी और रंग से वे सभी परिचित होते है। खेल में किसी विशेष व्यक्ति के बैल का हुलिया एक दल द्वारा पूर्व निर्धारित होता है। वह दल वेचवाल होता है और दूसरा लेवाल। गांव के बाहर खुले में इन दोनों दलों के बीच सवाल–जवाब होते है। इसमें विक्रेता पक्ष उस व्यक्ति का नाम पूछता है। जिसके पास ऐसा बैल होता है। अगर दूसरा पक्ष सही जवाब देता है, तो ठीक नही तो विक्रेता पक्ष जोर से चिल्लाकर नहीं कहता हैं और दौड़ पड़ता है। दूसरा पक्ष उसे छूनें को फर्लांग तक दौड़ता है, और उसे छूनें का प्रयास करता है। नहीं छूनें पर यहाँ कुछ देर रूककर पुनः यही सवाल पूछा जाता है। नहीं बतानें पर यही प्रक्रिया दोहराई जाती है। तीसरा क्रम भी पहले क्रम की तरह होता है। इसके बाद भी अगर नाम नहीं बताया जाता है तो विक्रेता दल उसी स्थान पर दौड़ता हुआ लौटता है। जिस स्थान पर यह प्रक्रिया शुरू हुई थी। वहाँ वापस आकर कोई पेंड़ या पत्थर का निशान होता है। जिसकी रक्षा क्रेता दल का एक सदस्य करता है। जिसे चकमा देकर विक्रेता दल का सदस्य यदि निशान को छू लेता है तो वह दल विजेता हो जाता है।

3)ढुकढुकणियाँ :– इस खेल में स्थान की लम्बाई चौड़ाई के अनुसार कितनें भी खिलाड़ी शामिल हो सकते है। एक खिलाड़ी दाम देता है, जो अन्य खिलाड़ियों को छूनें का प्रयास करता है। अन्य खिलाड़ी पानी में डुबकी मारकर इधर–उधर हो जाते है। इस बीच यदि वह खिलाड़ी तैरकर किसी को छू लेता है तो दाम दस खिलाड़ी पर आ जाता है। पशु चराते वक्त बालक यह खेल घंटो तक खेला करते है।

4)आंवली–पीपली :– यह खेल गांव के बाहर पेड़ों पर खेला जाता है। इस खेल में पेड़ के नीचे एक गोला बनाया जाता है। उस गोलें में खड़ा होकर एक खिलाडी अपनी टांग के नीचे डंडा फेकता है, जिस खिलाडी पर दाम होता है, वह दौड़कर डंडा लाने जाता है। इस अवधि में सभी खिलाड़ी तेजी से पेड़ पर चढ़ जाते है। दाम वाला खिलाड़ी डंडे को लाकर गोलें मे रख देता है। अब डंडे की रक्षा करते हुए पेंड़ में चढ़े हुए खिलाडियों में से किसी को छूने का प्रयास करता है, इस बीच पेड़ से कूदकर दूसरे खिलाड़ी डंडे को छूने का प्रयास करते हैं। इस प्रयास में अगर दाम देने वाले खिलाड़ी को कोई छू लेता है तो यही प्रक्रिया दोबारा अपनायी जाती है। जब तक कि दाम देने वाला खिलाड़ी किसी अन्य को नहीं छू लेता। जब वह किसी को छू लेता है तो उस खिलाड़ी को दाम देना पड़ता है।

5) खो–खो :– खो खो विरोधीटीम के सदस्यों द्वारा छुआ जा रहा बचने की कोशिश इस खेल में 9 खिलाड़ी होते है। यह लड़के–लड़कियों सहित सभी वर्ग आयु के लोग खेलते है। मैच संबंधी नियम प्रत्येक टीमे मे खिलाडियों की संख्या 9 होगी और तीन खिलाड़ी इसके अतिरिक्त होते है। प्रत्यके पारी मे सात–सात मिनट छूने तथा दौडनें का काम बारी बारी से होना प्रत्येक मैच में 4 पारीयॉ होगी। दो पारियॉ छूने की तथा दो पारियॉ दौड़नें की होती है इस खेल में अम्पायर भी उन्ही का होता है।

6) कबड्डी :– कबड्डी शब्द का अर्थ है ''चलो हाथ पकड़'' यह बंगलादेश का राष्ट्रीय खेल है भारत के सभी वर्ग में खेला जाता है पर जनजातियों मे काफी लोकप्रिय खेल है। इसमे भी 9 खिलाडी टीम होते है। प्रथम टीम मे से कबड्डी कहता हुआ उसकी लाईन के अंदर तक प्रवेश करना होता है। यदि कबड्डी कहते कहते दूसरी टीम के खिलाड़ियों को छू लेता है तो वह खिलाड़ी बैठा दिया जाता है। यदि कबड्डी कहते कहते वह उसे पकड़ ले तो चित हो जाता है तो वह खिलाड़ी आउट माना जाता है। पाईन्ट के आधार पर हार–जीत होती है।

गांव के बाग–बगीचों चौपालों गलियों, छतों, आंगनों मे यानी जहां भाग दौड की जरा सी गुंजाइश है जवान कबड्डी खेलने में जुड़ जाते है।

इस खेल की सबसे बडी विशेषता इसकी सादगी है। इस खेल में उम्र का कोई बन्धन नही है कोई मंहगी पोशाक या जूतो की आवश्यकता भी नही हे इसमें दौड़ने, भागने कूदनें गिरने का भरपूर शारीरिक व्यायाम होता है।

7) गिल्ली डंडा :– गिल्ली डंडा संशवतः 2500 साल पहले से अधिक मूल रुप से भारत का प्राचीने खेल है। ग्रामीण क्षेत्रों , छोटे छोटे शहरों मे खेला जाने वाला शौकिया खेल है। डंडे से गिल्ली का हीट किया जाता है। हारने वालो को लगड़ी आदि का डंड दिया जाता है। रोचक खेले है।

8) पिड्डू :– इस खेल मे दो टीमें रहती है। बराबर खिलाड़ी होते है। समतल पत्थरों को एक के उपर एक जमाकर ढेर बनाकर फिर किसी भी टीम का 1 खिलाड़ी उस पत्थर के ढेर पर निशाना लगाकर एक गेंद फेंकता है पत्थर यदि बिखर जाते है तो दूसरी टीम के खिलाड़ी उस खिलाड़ी को गेंद से मारते है ताकि वह पत्थर नही जमा सकें। यह बड़ा रोचक खेल है।

उपसंहार :– इस तरह जनजातियों के कई और अन्य खेल भी होते हैं। मनोरंजन के लिए खेले जाते है। बारिश के समय घर में मनोरंजन के लिए सोलहसार अरी–दुरी–तिरी चंगा का खेल खेलते हैं। क्षेत्र चाहे बदल जाए मगर इनके खेल प्रायः समानता लिए होते है। बच्चों के अलावा युवा और बुजुर्गों में इन खेलों के प्रति अपनी आस्था है। अपना रूझान होता है। इसके बौद्धिक विकास के साथ साथ शारीरिक विकास भी होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

समाजशास्त्री अध्ययन गुप्ता एण्ड शर्मा, साहित्स प्रकशन

1. ट्राईबल कल्चर इन इण्डिया ,लेखक – एल.पी. विधार्थी (1976) ,कान्सेप्ट पब्लिशन, नई दिल्ली
2.भारतीय आदिवासी, एल.पी. विधार्थी (1975),नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3.द शिडयूल्ड ट्राइब्स ,जी.एस. पूर्रे (1963) ,पापुलर प्रकाशन, बम्बई
4.ट्राइब्स इण्डिया टू–डे ,नदीम हुसनैन (1987) ,हरनाम पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5.भारतीय समाज शास्त्र, मोतीलाल गुप्ता, साहित्य प्रकाशन आगरा
6.समाज शास्त्र – डॉ. डी.एस. बघेल
7.म.प्र. का सम्पूर्ण अध्ययन, एस.ए. सिद्दीकी, उपकार प्रकाशन
8.म.प्र. संदर्भ, शिव अनुराग पटेरिया, म.प्र. जन सम्पर्क का प्रकशन
9.सामान्य अध्ययन, आनन्द कुमार पाण्डेय एवं श्रमती अर्चना पाण्डेय, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
10.म.प्र. समान्य परिचय, उपेन्द्र सिंह महावीर प्रकाशन
11.म.प्र. शिव अनुराग पटेरिया, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया
12.म.प्र. सन्देश मंथली पत्रिका जन सम्पर्क संचालनालय।
13.रोजगार एवं निर्माण सप्ताहिक समाचार पत्र
14.दैनिक भास्कर समाचार पत्र

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.net